एपिसोड–43

आने वाली मुसीबतें और अधूरी तैयारियां

मुख्य शोध एवं लेखन –डा. अरविन्द दुबे

(सिग्नेचर ट्यून.....फेड्स आउट)

(शीर्षक गीत.....फेड्स आउट)

नैरेटर– रेडियो धारावाहिक (धारावाहिक का नाम) हर एपिसोड में ग्लोबल वार्मिंग और उससे जुड़े वातावरण परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों को परत दर परत उजागर करता चल रहा है। इतने सारे विवरणों के बाद यह प्रश्न स्वाभाविक है कि हम इन दुष्प्रभावों के लिए क्या कर रहे हैं? यह तय है कि हम इन्हें न तो समाप्त कर सकते हैं न होने से रोक सकते है। अंततः हमें इनसे निपटना ही होगा। आपातकालीन स्थिति में क्या हम इससे निपटने के लिए तैयार हैं?क्या हमारे पास इससे निपटने के लिए उपयुक्त संसाधन हैं? हैं तो क्या ये पर्याप्त हैं या फिर अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। आइए आज की इस कड़ी में ग्लोबल वार्मिंग के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों और उससे जुड़े वातावरण परिवर्तनों के इसी पहलू पर विचार करते है।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नैरेटर– आइए कुछ पीछे चलते हैं यह बात है अगस्त 2016 में साइबेरिया के यमल प्रांत की.....एक हादसा हुआ..... कुछ मौतें हुई.....कुदरत का एक करिश्मा उजागर हुआ। आइए आपको ले चलते हैं वहीं के एक अस्पताल में जहां रात भर अपने व्यस्त कार्यक्रम के बाद एक थका हारा रूसी जूनियर डाक्टर दिमित्री अपने सीनियर प्रोफेसर स्टेमलर को घटनाओं का विवरण दे रहा है।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

शब्द दृश्य– एक

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान– एक अस्पताल *(उपयुक्त ध्वनि प्रभाव दें)*

(जूनियर डाक्टर दिमित्री अपने कक्ष में है। मुख्य डाक्टर प्रोफेसर स्टेमलर का प्रवेश– उपयुक्त ध्वनि प्रभाव दें)

स्टेमलर ***(पास आते हुए)–*** गुड मॉर्निंग डॉक्टर दिमित्री। काफी थके लग रहे हो, हाउ वाज द नाइट?

दिमित्री– हॉरिबल, कल रात अचानक एक ही जगह से करीब 40 मरीज आकर भर्ती हो गए.....करीब एक जैसी बीमारी.....शरीर पर मार्क्स, दस्त और दस्त में खून.....

स्टेमलर– व्हाट 40 मरीज दिमित्री?

दिमित्री– यस सर और सारे के सारे एक ही जगह से..... पास में यमल से..... घुमंतू चरवाहे हैं..... ..... एक ही डेरे के सारे लोग हैं।

स्टेमलर– बीमार होने से पहले क्या खाया था, यह हिस्ट्री ली दिमित्री?

दिमित्री– जी वही सामान्य खाना और रेनडियर का मांस।

स्टेमलर– निश्चित ही फिर सबको फूड प्वाइजनिंग हुई होगी। कहीं एक साथ खाया होगा इनफेक्टेड मीट..... .....

दिमित्री– सर पहले मैंने भी यही सोचा था, पर.....

स्टेमलर– *(चौंकते हुए)* पर..... पर क्या?

दिमित्री– पर उनमें से कुछ की हालत काफी खराब है, दे आर रियली सीरियस..... एक बच्चा है डेनिस, आयु 9 साल, उसकी तो सांस भी ठीक से नहीं चल रही है, कहीं.....

स्टेमलर– अच्छा.....

दिमित्री– हां और इस बच्चे की दादी की तो एक दिन पहले, अस्पताल आने से पूर्व ही मौत भी हो चुकी है।

स्टेमलर– तब तो कुछ गड़बड़ है, फूड प्वाइजनिंग में तो ऐसा नहीं होना चाहिए। आओ वार्ड में चलें। पहले पेशेंट देखें तब फैसला करेंगे।

(पद चाप, दृश्य की एंबिएंस दृश्य एंबिएंस बदलती है)

दिमित्री– सर यह है डैनिश एज नाइन ईयर्स, इसी की दादी की कल इसी बीमारी से मौत हो चुकी है

स्टेमलर– इधर करवट लो बच्चे, हां हां ऐसे, ठीक..... (पौज)

(इस बीच तेज सांस लेने की आवाज आती रहेगी जो आगे के कुछ डायलॉग के बीच पृष्ठभूमि में रहेगी)

स्टेमलर– माय गॉड ही इज वेरी सिक, देखो सांस का क्या हाल है? इसे तो इंटेंसिव केयर में शिफ्ट करो..... ..... इसे वेंटिलेटर पर रखना होगा..... क्विक

(उपयुक्त ध्वनि प्रभाव दें)

स्टेमलर– दिमित्री

दिमित्री– यस प्रोफेसर

स्टेमलर– व्हाट डू यू थिंक..... यह क्या है, किस बीमारी से पीड़ित हैं यह सब?

दिमित्री– स्टेमलर सर, मेरा तो दिमाग ही काम नहीं कर रहा है..... पर दिस इज नॉट फूड प्वाइजनिंग

स्टेमलर– बिल्कुल सही सोच रहे हो तुम.....और उस बच्चे की वह सांस की परेशानी.....स्किन पर यह निशान.....
तुमसे इन रोगियों की सूचनाओं में तुमसे कुछ छूट तो नहीं रहा है?

दिमित्री– *(सोचता है)* हां उनमे से एक व्यक्ति बता रहा था कि आजकल रेनडियर्स में कोई बीमारी फैल रही है जिससे वे अपने आप भारी तादाद में मर रहे हैं।

स्टेमलर– यदि हम देखें तो यह सारा विवरण एंथ्रेक्स की डायग्नोसिस में एकदम फिट बैठता है।

दिमित्री– सर आप तो जानते हैं कि सन् 1941 में एंथ्रेक्स को समाप्त घोषित कर दिया गया था। यहां तक कि अब तो एंथ्रेक्स का टीका भी आसानी से उपलब्ध नहीं है।

स्टेमलर– दिमित्री तुम ऐसा करो, इनके कल्चर्स भेजो.....प्रोविजनल डायग्नोसिस में एंथ्रेक्स लिखना। मैं पैथोलोजिस्ट से बात कर लेता हूं.....सी व्हाट कम्स आउट?

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नैरेटर– जब इन रोगियों की पैथोलोजी रिपोर्ट आई तो लोगों के होश उड़ गए।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

दिमित्री– *(अंदर आते हुए)* स्टेमलेर सर क्या आपने यह कल्चर सेंसटिविटी रिपोर्ट देखी है?

स्टेमलर– हां पता है दिमित्री.....इदिस इज एंथ्रेक्स, यही न?

दिमित्री– जी सर, पर यह इतने सालों बाद एंथ्रेक्स अचानक वापस कैसे आया?

स्टेमलर– यही तो फिक्र की बात है दिमित्री।

दिमित्री– यानी कि दुनिया से चली गई एक खतरनाक बीमारी अब दोबारा दस्तक दे रही है।

स्टेमलर– दिमित्री बात इन मरीजों तक खत्म नहीं होती, इन के संपर्क में आने वाले सारे लोगों का परीक्षण करना होगा..... उनके बचाव के लिए टीकों की व्यवस्था करनी होगी।

दिमित्री– यह तो बहुत बड़ा और कठिन काम होग। एकदम कहां से आएंगी एंथ्रेक्स के टीकों की इतनी खुराकें?

स्टेमलर– दिमित्री जो रेनडियर मर रहे हैं उनकी परीक्षा भी करानी होगी। अगर उनमें एंथ्रेक्स की पुष्टि होती है तो उनके शवों का कैसे निस्तारण करना है, यह भी निश्चित करना होगा।

दिमित्री– और इससे पहले कि एंथ्रेक्स की महामारी फैल जाए हमें इसके स्रोत का पता करना होगा।

स्टेमलर– दिमित्री एक लेटर बनवाओ, हमें सरकार को और प्रशासन को इस दुर्घटना की जानकारी देनी है.. ..... एज अर्ली एज पॉसिबल।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नैरेटर– खबर फैलते ही घबराहट और डर का माहौल बन गया। अफवाहें फैलने लगीं। प्रशासन के हाथ–पांव फूल गए। अगले दिन 42 लोग और इसी तरह के लक्षणों के साथ अस्पताल में भर्ती हो गए। गंभीर रूप से बीमार 9 वर्षीय डेनिश की मृत्यु हो गई। हालात इतने कठिन हो गए कि अमल पेनिसुला के तत्कालीन गवर्नर कोबिल्किन ने आपातकाल की घोषणा कर दी।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

(गवर्नर कोबिल्किन स्थानीय दूरदर्शन पर बोल रहे हैं वह अपना वक्तव्य रूसी एक्सेंट के साथ अंग्रेजी में शुरू करेंगे फिर वॉयस ओवर करके स्थानीय कलाकार इसे हिंदी या प्रांतीय भाषा में आगे बोलेगा)

गवर्नर– आई एम इनफॉर्म्ड अबाउट द डेथ ऑफ द बॉय इन द हॉस्पिटल *(वॉयस ओवर)* मुझे सूचना मिली है कि अस्पताल में भर्ती एक बच्चे की एंथ्रेक्स से दुखद मृत्यु हो गई है, जिसका मुझे बेहद दुख है। मेरी संवेदनाएं मृतक के परिवार के साथ है। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि बच्चे को बचाने के लिए डॉक्टरों ने हर संभव प्रयास किए पर हम कामयाब नहीं हो सके। बीमारी 75 वर्षों बाद पुनः लौटी है हम इसकी वजह जानने के हर संभव प्रयास करेंगे। संक्रामक रोगों की राष्ट्रीय चिकित्सा अधिकारी श्रीमती रीना शेष्टाकोबा घटना स्थल के लिए रवाना हो गई हैं। हालात से निपटने के लिए सेना की आपातकालीन टीमों और स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों को भी घटनास्थल के लिए रवाना कर दिया गया है। आप लोगों से निवेदन है कि शांति बनाए रखें और अफवाहों पर ध्यान न दें।

(गवर्नर का व्याख्यान फेड होता है उस पर नैरेटर की आवाज सुपर इंपोज होती है)

नैरेटर– अंततः जब एंथ्रेक्स के दोबारा प्रकट होने के कारण का पता लगा तो हर कोई हैरान था। करीब 75 वर्ष पूर्व रेनडियरों में एंथ्रेक्स का रोग फैला था। उस समय एंथ्रेक्स से मरे एक रेनडियर का शव वर्फ की परतों में दब गया और 75 वर्षों तक लगातार वहीं दबा रहा। इस वर्ष जब गर्मियों में वातावरण का तापक्रम तेजी से बड़ा तो वर्फ की परतें पिघल गईं और उस रेनडियर का शव खुले में आ गया। रेनडियर के शरीर में सुसुप्तावस्था में पड़े एंथ्रेक्स के जीवाणु 75 वर्ष बाद फिर सक्रिय हो उठे। हवा के साथ वे आसपास के सारे क्षेत्र में फैल गए और देखते ही देखते उन्होंने पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

उद्घोषिका– 10 दिनों में करीब 2,349 रेनडियरों की मृत्यु हो गई। सरकार ने आनन–फानन में 4,500 रेनडियरों को एंथ्रेक्स के टीके लगवाए। योजना थी कि करीब 41,000 रेनडियरों को एंथ्रेक्स के टीके लगाए जाएंगे। एंथ्रेक्स मरे हुए रेनडियरों के शवों को सुरक्षित रूप से निपटाने की व्यवस्था की गई। इसमें स्थानीय प्रशासन ने सेना की मदद से युद्ध स्तर पर काम किया।

नैरेटर– यह थी ग्लोबल वार्मिंग की एकदम डरा देने वाली तस्वीर.....एक छोटे से क्षेत्र में फिर से उभरने वाले एंथ्रेक्स से निपटने के लिए एक देश के प्रशासन को एडी–चोटी का जोर लगाना पड़ा। जब एक दिन यही वैश्विक स्तर पर होगा तो क्या होगा? इससे कैसे निपटा जा सकेगा? कितने संसाधनों की आवश्यकता होगी? कहां से आएंगे इतनी भारी मात्रा में रोगरोधी टीके? कहां से आएगा मानव संसाधन? कहां से आएगा यह अतिरिक्त धन?

उद्घोषिका– विकासशील देश, जिनका ग्लोबल वार्मिंग में सबसे कम योगदान है, वही इस के सबसे बड़े शिकार होंगे। वे तो अभी अपनी मूलभूत स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को भी पूरा नहीं कर पाए हैं वह ऐसी परिस्थितियों में क्या करेंगे? आइए जानते हैं इस सब के बारे में, बस बने रहिए हमारे साथ.....

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

शब्द दृश्य– दो

स्थान– ि वश्व स्वास्थ्य संगठन का स्थानीय ऑफिस

(विवेक और मेधा यहां अपने मामा प्रशांत के मित्र विकास के रिफरेंस पर डॉक्टर अल्पेश ठाकुर से मिलने आए हैं।)

मेधा– विवेक, विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्थानीय ऑफिस तक तो हम आ गए। अब डाक्टर अल्पेश ठाकुर को ढूंढना है।

विवेक– हां, यह रही उनकी नेम प्लेट..... अल्पेश ठाकुर, सीनियर एपिडेमियोलॉजिस्ट, आओ विवेक।

(दरवाजा खुलने का ध्वनि प्रभाव)

मेधा– नमस्ते ठाकुर अंकल, मैं मेधा

विवेक– और मैं विवेक, विकास अंकल ने आपसे मिलने के लिए कहा था।

ठाकुर– ओहो, वेलकम, यू आर वेलकम। हां, विकास ने उस दिन फोन किया था.....३ शायद किसी प्रोजेक्ट के बारे में..... किसका है वह प्रोजेक्ट?

मेधा– मेरा..... ग्लोबल वार्मिंग और मानव स्वास्थ्य।

ठाकुर– गुड, गुड, तो बताओ कैसे मदद की जाए आपकी? मेधा आप क्या जानना चाहती हैं?

मेधा– अंकल यह तो निश्चित है कि ग्लोबल वार्मिंग से वातावरण में जो परिवर्तन होने हैं उनके दुष्प्रभाव तो मानव स्वास्थ्य पर पड़ने ही पड़ने हैं।

ठाकुर– बिल्कुल।

मेधा– क्या हम बुरे प्रभावों से बचने के लिए कुछ तैयारियां कर सकते हैं?

विवेक– क्या हमने पहले से इसके लिए कुछ तैयारियां की हैं?

ठाकुर– मेधा, सबसे मुश्किल बात तो यह है कि आम आदमी इस ग्लोबल वार्मिंग को वास्तविकता मानने से कतरा रहा है।

विवेक– मतलब?

ठाकुर– मतलब यह कि आम आदमी इसे भविष्य में होने वाले खतरे की तरह देखता है जो शायद दो–चार सौ सालों बाद शायद आएंगे।

मेधा– पर अंकल हकीकत यह है कि ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव तो जगजाहिर हैं, सब को दिखने लगे हैं। यह बढ़ती संक्रामक बीमारियां यह मौसम की यह अति, आए दिन की वातावरण प्रदूषण की दुर्घटनाएं, यह बढ़ते संक्रामक रोग.....

ठाकुर– ठीक कहती हो मेधा। तो सबसे जरूरी तो लोगों को यह समझाना है कि ग्लोबल वार्मिंग भविष्य की कोई आपदा नहीं आज की खतरनाक सच्चाई है।

मेधा– इसके लिए हम सरकारी और गैर सरकारी प्रचार माध्यमों का सहारा ले सकते हैं।

विवेक– और सोशल मीडिया का भी.....

ठाकुर– हां सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम साबित होगा।

मेधा– पर इसके अलावा हमें प्रशासनिक तंत्र के स्तर पर भी काफी तैयारियां करनी होंगी।

ठाकुर– ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले वातावरण परिवर्तन की कई घटनाएं मानव स्वास्थ्य को सीधे–सीधे प्रभावित करेंगीं।

विवेक– कौन सीं?

ठाकुर– एक तो गर्मी, गर्म हवाएं और उससे जुड़ी मौसम की अति।

मेधा– यानी की आंधी, तूफान, बाढ़, सूखा, जंगलों की आग.....

ठाकुर– इसके अलावा संक्रामक रोगों के विभिन्न पहलुओं में जो परिवर्तन आ रहे हैं।

मेधा– जैसे कि ये संक्रामक रोग उन क्षेत्रों में भी दस्तक दे रहे हैं जहां भी पहले कभी नहीं होते थे और उनकी बढ़ती गंभीरता.....

ठाकुर– इन सब के कारण भोज्य पदार्थों की पैदावार में जो कमी आएगी या स्वच्छ पेयजल में अभूतपूर्व कमी की संभावना है वह मानव स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करेगी।

मेधा– इसके अलावा बाढ़ और दलदली भूमि के बनने से प्रभावित लोग जब पहले से जनसंख्या विस्फोट के दौर से गुजर रहे क्षेत्रों की ओर जाएंगे तब क्या हालात बनेंगे?

ठाकुर– अब इन्हीं सारे क्षेत्रों में हमें तैयारियां करनी है। सबसे पहले तो इन अनुमानित प्रभावित क्षेत्रों में गहन सर्वेक्षण की आवश्यकता है ताकि हम यह जान सकें की व्यवस्था कहां कमजोर है? क्या और कितने सुधारों की जरूरत है।

मेधा–.....और यह सर्वेक्षण अनवरत रूप से चलने चाहिए।

ठाकुर– मौसम के जो परिवर्तन मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं.. जैसे भीषण गर्मी और लू, शीत लहर, तूफान, इन सब की सटीक और समय रहते भविष्यवाणी जनसाधारण को मिले मेरा ताकि समय रहते इनसे बचने के उपाय किए जा सकें और धन जन के नुकसान को कम से कम किया जा सके।

मेधा– .....और जहां संसाधनों एवम सुधारों और मदद की सबसे ज्यादा जरूरत है उन्हें चिन्हित करके वहां मदद पहुंचाने की तैयारी रखनी पड़ेगी।

ठाकुर– सबसे बड़ी आवश्यकता है स्वास्थ्य शिक्षा की ताकि आमजन पहले तो ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले खतरों के बारे में जानें, यह हकीकत है इसे स्वीकार करें।

मेधा– हां तभी तो इससे बचने के उपाय सीखने में उनकी रुचि होगी।

विवेक– विकास अंकल कह रहे थे कि मच्छरों से होने वाली बीमारियां बढ़ेंगीं तो सबको मच्छरों को नष्ट करना, उन्हें पनपने से रोकना, मच्छर काटने से बचना सीखना होगा।

मेधा– उन्हें सीखना होगा कि छूत वाली बीमारी को फैलने से कैसे रोकें? सफाई और हाथ धोने के नियम सीखने होंगे..... उनका कड़ाई से पालन करना होगा।

ठाकुर– सबसे बड़ी बात मेधा यह सीखनी और करनी होगी कि ग्लोबल वार्मिंग की गति धीमी कैसे हो?

मेधा– नई दवाइयां नई एंटीबायोटिक और वैक्सीन का निर्माण भी तो जरूरी होगा ना ठाकुर अंकल?

ठाकुर– वह तो हो ही रहा है। मलेरिया का टीका सफलता के काफी करीब है। एड्स के टीके पर काम हो रहा है, जल्दी ही सफलता भी मिलेगी। डेंगू और चिकनगुनिया के टीके पर तेजी से अनुसंधान चल रहे हैं एक न एक दिन उन्हें सफल होना ही है।

मेधा– पर जिस तरह से संक्रामक रोगों के बढ़ने का अंदेशा है उतनी दवाइयां और टीके एकाएक कहां से आएंगे?

ठाकुर– मान लें कि यहां हमारी तैयारियां अधूरी हैं पर इसे एकदम परफेक्ट बनाया भी नहीं जा सकता है क्योंकि पता नहीं भविष्य में हमें किन–किन समस्याओं से दो–चार होना पड़े। यह तो जब सामने आएगा तभी करना होगा।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नैरेटर– सुना आपने, ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले स्वास्थ्य दुष्प्रभावों के लिए सिर्फ सरकारों या सरकारी संस्थाओं पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। हमें भी व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करने होंगे, मगर कैसे? आइए जानते हैं। तो चलिएअमारे साथ विवेक के स्कूल जहां इस विषय पर एक नाटिका का मंचन होने वाला है, तो चलें?

शब्द दृश्य– तीन

नटी– मैं हूँ नटी और ये सूत्रधार *(फुसफुसा कर)* कहाँ रह गया? *(तीव्र स्वर में)* ओ सूत्रधार, कमबख्त स्वच्छ हवा की तरह कहां गायब हो गया तू?

सूत्रधार–*(आते हुए)–* ***अरे इतना क्यों गर्म होती है महारानी,***
ले शुरू होता है नाटक, और ये आई ऋतुओं की रानी

(ऋतुओं की रानी का आगमन। इसके लिए जरूरी ध्वनि प्रभाव दें जैसे कोयलों का कूकना, बारिश की आवाज, झीगुरों का बोलना, चिड़ियों चहचहाना आदि)

सूत्रधार– ***आओ ऋतुओं की रानी,***
परेशान सी दिखती हो,
कोई नई समस्या है क्या?
खोलो मन की गॉठ,
बताओ हमको सारी कहानी,
ओ ऋतुओं की रानी।

ऋतुओं की रानी– ***गरमी कितनी लंबी हो गई सरदी कितनी छोटी,***
बारिश मनमानी करती है नीयत हो गई खोटी।

सूत्रधार– क्यों, ऋतुओं की रानी गरमी लंबी क्यों?

नटी– तू क्या स्कूल के पीछे बैठ कर पढ़ा है करमजले, जानता नहीं गीन हाउस प्रभाव?

ऋतुओं की रानी–हां,

जला जला कर ईधन तुमने कल–कारखाने बढ़ा–बढ़ा बढाकर
कितनी कार्बन डाइआक्साइड, कितनी सल्फर डाइआक्साइड,
कितने सारे कार्बन के कण, वायुमंडल में बढ़ा–बढ़ाकर।
धरती का तापमान बढ़ाया,
वायुमंडल को भी गरमाया।
तभी हो गई लंबी गरमी,
तभी हुई है भीषण गरमी।

सूत्रधार– लंबी गरमी.....भीषण गरमी?

ऋतुओं की रानी–हां उन्नीस सौ अठ्ठानवे अब तक का सबसे गरम साल था।

गरमी से हर साल न जाने कितने मरते?
लू लगने से , दस्तों से
सबसे ज्यादा बच्चे मरते बूढे मरते।

नटी– अब क्या होगा?

ऋतुओं की रानी–होना क्या है, प्रलय आएगी।

सूत्रधार– प्रलय?

ऋतुओं की रानी– हां

बर्फ की चट्टानें पर्वत पर पिघल रहीं हैं,
जल बनकर सागर का स्तर बढ़ा रहीं हैं।

सूत्रधार– बढ़ रहा है सागर का स्तर, क्यों?

(सागर की लहरों की ध्वनि फिर सागर का आगमन)

सागर–

बर्फ पहाड़ों की पिघल–पिघल कर
मेरा स्तर बढ़ा रही है,
कहां जाऊगा ऐसे में मै?
लील रहा है पानी मेरा
तट पर बसे हुए नगरो को, गावों को,
उपजाऊ खेतों में दलदल भर जाएगा।
मिल जाएगा पीने के पानी में मेरा खारा पानी,
तो,
अपने घर को छोड़ बसेरा और देखना होगा,
अल नीनो का भी प्रकोप हर बार झेलना होगा।

नटी– दलदल?

सागर–

इस दलदल में पनपेंगे
मक्खी–मच्छर, कीट–पतंगे,
तरह के रोग वहां गाढ़ेंगे झंडे।
क्यों ऋतुओं की रानी?

ऋतुओं की रानी–

ज्यों–ज्यों गरमी बढ़ती जाती,
सरदी के दिन घटते जाते,
बारिश करती है मनमानी,
चाहे जहॉ, चाहे कभी और कितना भी,
बरसाती है पानी।
कहीं पे सूखा और बाढ़ कहीं पर,
भरे हर जगह पानी ही पानी।

(तेज बायु चलने का स्वर जो अंततः फेड हो जाता है)

सूत्रधार– अरे वायु आप?

वायु– हां–हां

मुझको प्राण वायु कहते हो,
मुझ से ही जीवन चलता है,
पर अब मुझमें जहर भर रहा।
कार्बन डाइआक्साइड बढ़ती जाती,
सल्फर डाइआक्साइड चढ़ती जाती,
कार्बन कणों से पटी पड़ी हूँ,
ग्लोबल वार्मिंग से गरम बड़ी हूँ।

सूत्रधार– तो,

वायु– *जब होती हूँ नम तो पनपते,*
मक्खी–मच्छर, कीट–पंतगे,
मलेरिया, डेगू, हैजा से रोग पनपते।
फिर मैं कैसी हूँ प्राण वायु ,
फिर कैसी जीवन दाता हूँ,
मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ

(मच्छर की भनभनाहट जो पहले तीव्र होती है पर बाद में फेड हो जाती है)

मच्छर– **गरमी होगी, दलदल होगी,**
और हवा में नमी भी होगी,
और जीने को क्या चाहिए?
और जीने को क्या चाहिए?

सूत्रधार– अरे कौन हैं आप? यहां कैसे घुसे चले आ रहे हैं आप? देखते नहीं नाटक चल रहा है।

मच्छर– लो जी, हमें ही नहीं पहचानते.....दुनिया का बसे बड़ा नाटक तो मेरी वजह से ही चल रहा है। पूछो, पूछो.....कौन सा?

सूत्रधार– *(बोर होता हुआ स्वर)* कौन सा?

मच्छर– मलेरिया, डेंगू चिकनगुनियां.....ए मेरे बच्चे है, *(जोर देकर)* मेरे बच्चे।

बड़ा बेटा मलेरिया मेरा,
इतना बड़ा कि दुनिया की
आधी आबादी पर है राज
डेंगू मेरा छोटा बेटा
धीरे–धीरे, धीरे–धीरे,
धीरे–धीरे, बड़ा हो रहा
मेरी छोटी चिकनगुनियां,
मुन्नी सी, प्यारी सी बेटी,
धीरे–धीरे बड़ी हो रही।

नटी– तो मच्छर हैं आप?

मच्छर – हा–हा–हा–ठीक पहचाना

तुमने जितना मुझे मिटाया,
मैं उतना ही बढता आया।
पहले राते ठंडी होतीं,
जो मुझे पर भरी पड़तीं थीं।
पर अब तो
ग्लोबल वार्मिंग तेरा सहारा,
बढ़ता जाए वंश हमारा।

(मंच पर समवेत स्वरों में गाते तीन पात्र, दो लड़के और एक लड़की, प्रवेश करते है)

समवेत स्वर– *विश्व विजय कर के दिखलाएं*
दुनिया में परचम लहराएं,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा,
ग्लोबल वार्मिंग तेरा सहारा,
तू इंसा किस्मत का मारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा

सूत्रधार– अरे.....रे.....रे.....रे कौन हैं आप लोग? सागर के बढ़ते पानी की तरह शरीफों की बस्ती में कैसे घुसे चले आ रहे हो, मंच पर नाटक चल रहा है, नाटक।

मच्छर– चल हट, ये हैं मेरी संतानें, मुझ मच्छर की प्यारी–प्यारी संतानें। हां तो बच्चो तुम्ही बताओ कौन हो तुम?

मलेरिया *(अट्टहास करके)–* हा, हा, हा, मैं मलेरिया।

हिंदुस्तान, ईरान, बांग्लादेश, अमेरिका,
इंग्लेंड हो या फिर श्रीलंका,
हर तरफ बजता है अपना डंका।

नटी– क्यों, क्यों, क्यों?

मलेरिया– वही
बढती गर्मी, हवा में नमी,
समझो चांदी हो गई अपनी।

सुना है तुम्हारे वैज्ञानिक कहते हैं कि दुनिया के आधे हिस्से में मेरे फैलने लायक हालात बन गए हैं और अगले साठ सालों में तो दो तिहाई दुनियां में मेरा साम्राज्य फैल जाएगा, हा –हा–हा

(अट्टहास करता है)

डेंगू– और मैं.....मैं डेंगू हूँ..... 1996 में पहली बार चौंकाया मैने, फिर तो दिल्ली दूर नहीं थी। पहले मैं गरम जलवायु वाली जगहों पर ही हो पाता था पर अब ग्लोबल वार्मिंग की वजह से हर जगह मेरे लायक होती जा रही है।

चिकुन गुनिया–*(इसके लिए कन्या स्वर ही प्रयोग करें)* मैं चिकुनगुनियां.....
मेरा मारा ज्वर से तपता, जोड दर्द से चिल्लाता है।
ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ने से मेरा घर बढ़ता जाताहै।

समवेत स्वर– *नहीं रुके अभियान हमारा,*
झंडा ऊंचा रहे हमारा.... /
(झंडा ऊंचा रहे हमारा की बार–बार आवृति होते–होते ये स्वर फेड़ हो जाते हैं)

सूत्रधार– भयानक बहुत भयानक।

नटी– *(डरते हुए)* ए...ए....ए....ए, आप कौन हैं?

समवेत स्तर– *(दो लडके दो लडकियां के स्वर)*

हम हैं नहीं पुराने रोग।
पहले हम थे कहीं नहीं
हम हैं कुछ अनजाने रोग
ग्लोबल वार्मिंग बढा. रही है,
मिलकर खुशी मनायेंगे।
नाचेंगे गाएंगे,
मिलकर खुशी मनाएंगे।

(इकतारा बजाते एक साधु का प्रवेश)

साधु– *जिस दिन दुनिया में आया था, मिला पालना लकडी का,*
जिस दिन दुनियां से जाएगा, होगा बिछौना लकड़ी का,
देख तमाशा लकड़ी का, भाई देख तमाशा लकड़ी का।

सूत्रधार– **(दुत्कार कर)** ऐ.....ऐ लकड़ी.....मेरा मतलब लकड़ी वाले साधु जी महाराज, ये नाटक है, यहां नहीं मिलेगी भिक्षा।

साधु– *कौन मांग रहा है भिक्षा,*
मैं देने आया हूँ शिक्षा।

सूचधार– पर आप हैं कौन?

साधु– मैं जंगल हूँ। हमेशा इस इंसान को देता ही आया हूँ..... इस्तेमाल के लिए लकड़ी, खाने के लिए भोजन, पशुओं के लिए चारा और इसके जीने के लिए ऑक्सीजन।

सूत्रधार– बरोबर

साधु– *जला–जला ईंधन जो गैसें,*
ये वायुमंडल में भरता था,
उसमें की कार्बन डाइआक्साइड,
हम ही तो निपटाते थे,
ग्लोबल वार्मिंग से बचाते थे।

नटी– ठीक कहा जंगल महाराज

जंगल–पर इसको तो सभ्यता खा गई, इस का लालच खा गया।

मैने इसको दिए सहारे,
और इसने
चलवाए मुझ पर ही आरे,
खुद नहीं है इसको सब्र,
खोद रहा अपनी ही कब्र

सूत्रधार– कब्र? सचमुच कब्र *(गहरी सांस लेकर)*

हे भगवान, ए मूरख इंसान।

नटी– अब कोई और है आने को?

(धरती का प्रवेश, गूंजती सी आवाज)

नटी– धरती?

धरती– हां धरती

अब तो गरमी सही न जाती,
सारा संतुलन बिगड़ रहा है,
तापक्रम मेरा बढ़ रहा है।

नटी– वह कैसे?

धरती–

सागर ऊपर चढ़ता आता,
पानी खारा होता जाता
मेरी कोख सूखती जाती,
घटती जाती पैदावार
पेट न सब के भर पाऊंगी,
फिर कैसे मॉ कहलाऊॅगी?

सूत्रधार– अब मैं चला, नहीं सुन सकता, फट जाएगा मेरा दिमाग।

नटी– अरे रूक तो.....नाटक खत्म ही है अब.....ठहर जरा चलूंगी मैं भी।

(हांफते–घबराए एक पात्र का प्रवेश, ये इंसान है)

इंसान– नहीं नहीं, नाटक खत्म नहीं.....नहीं तो हम सब खत्म हो जाएंगे।

नटी– अब तुम कौन हो, इतना घबराए.....फक सफेद चेहरा.....हड्डी शरीर....तुम्हारा तो सांस भी फूल रहा है.....आखों के नीचे काले घेरे.....लगता है काफी समय से बीमार हो

इंसान– मैं मनुष्य हूॅ, इस नाटक का प्रमुख पात्र.....

सांस हमारा फूल रहा है,
ब्लड प्रेशर भी बढा हुआ है,
मौसम पीछे पड़ा हुआ है।

नटी–अच्छा

इंसान–

जलती रोगों की ज्वालाएं,
घेरे है लाखों चिंताएं
जीता हूॅ इतने तनाव में,
लगता पागल हो जाऊंगा,
इतने रोगों का शिकार हूॅ,
कितने दिन तक जी पाऊंगा?

(एक भारी आवाज वाले व्यक्ति या प्रवेश, ये पर्यावरण विज्ञानी हैं)

पर्यावरण विज्ञानी– *सुन भाई सुन,*
बात हमारी ध्यान से सुन

इंसान– आप, कौन हो आप?

पर्यावरण विज्ञानी–मैं..... मैं पर्यावरण विज्ञानी हूँ,

तू खुद जड़ है इस विनाश की,
पर्यावरण के सत्यानाश की,
पर इतना निराश मत हो,
बदलेंगे हालात सुनो,
थोड़ी कोशिश करनी होगी,
थोड़ी कोशिश करनी होगी।

इंसान'– *बोलो–बोलो क्या करना है,*
आज कुछ नहीं किया तो निश्चित,
कल को मुझको ही मरना है,
कल को मुझको ही मरना है,

पर्यावरण विज्ञानी– *पर्यावरण प्रदूषण रोक,*
ग्रीनहाउस गैसों को रोक,

इंसान– मगर कैसे?

पर्यावरण विज्ञानी– परम्परागत ईंधन जैसे लकडी कोयला कंडे–उपलों का प्रयोग बंद कर। सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने के तरीके खोज। पेट्रोल या डीजल चालित वाहनों का प्रयोग किफायत से कर। कार पूल बना जिससे एक ओर जाने वाले चार छह लोग एक ही कार में जा सकें। सार्वजनिक यातायात का प्रयोग कर। इससे होगी ईंधन की खपत कम, प्रदूषण कम, ग्रीन हाउस गैस का उत्पादन कम, होगी ग्लोबल वार्मिंग कम।,

इंसान– ऐसा तो हम आसानी से कर सकते हैं।

पर्यावरण विज्ञानी– साधारण बल्व की जगह सी.एफ.एल., अरे वही कम वाट वाले नए किस्म के बल्ब प्रयोग कर।

पानी बचा, वृक्ष लगा,
स्वच्छ रख जल, रोग भगा

इंसान– हूँ,

करना होगा हमको ऐसा,
नहीं एक दिन पछताएंगे
सारे मारे जाएंगे,
सारे मारे जाएंगे

नटी–अरे नासपीटे नाटक खत्म हो गया, परदा गिरा न। दर्शकों को बोल सलाम, नमस्ते, सत श्री अकाल।

(भीड़ का कोलाहल जो धीरे–धीरे फेड हो जाता है)

(दृश्य परिवर्तन संगीत..... फेड्स आउट)

नैरेटर– आज की इस कड़ी में आपने सुना कि ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए हमें क्या–क्या करना होगा, क्या–क्या सावधानियां बरतनीं होंगीं? धारावाहिक के अगले एपीसोड में हम बात करेंगे (अगले एपीसोड का सार संक्षेप), तो सुनना न भूलिए आज के ही दिन, आज के ही समय, तब तक के लिए नमस्कार।